सती मदनरेखा
सुदर्शनपुर के राजा मणिरथ और युवराज युगबाहू दोनों भाइयों में बहुत ही घनिष्ट प्रेम था। प्रजा उन्हें राम-लक्ष्मण की जोड़ी कहती थी। मणिरथ युगबाहू की सब सुख सुविधाओं का ध्यान रखता था तो युगबाहू भाई की प्रत्येक बात का सम्मान करता था। और उनके इशारों पर जान न्यौछावर करने को तैयार रहता था। मणिरथ सन्तानहीन था। युगबाहू के एक पुत्र था–चन्द्रयश।
भैया ! इस खेल की चालें तो खत्म होने वाली नहीं... भोजन का समय हो गया है, अब चलिए न?

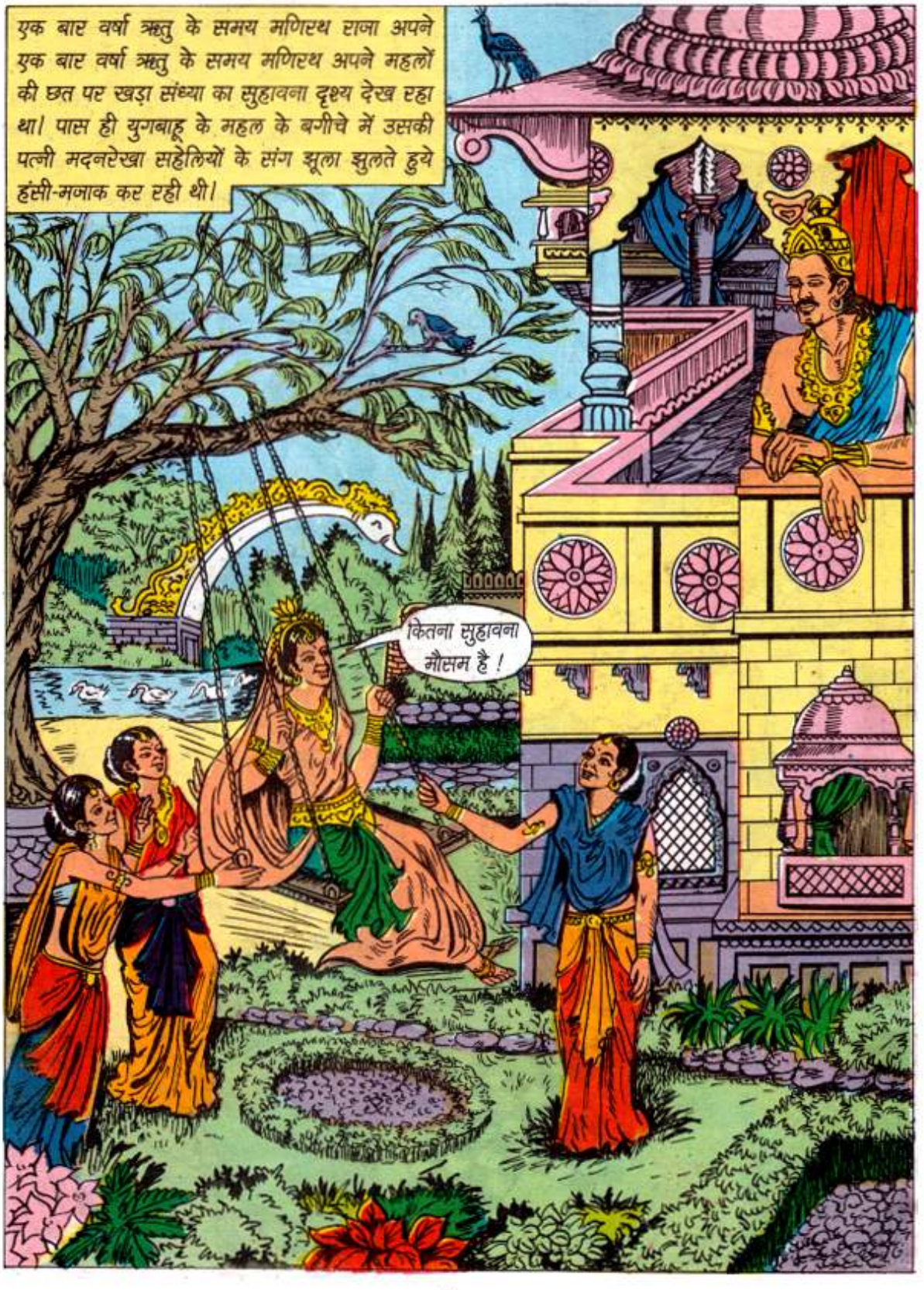
एक बार वर्षा ऋतु के समय मणिरथ राजा अपने
एक बार वर्षा ऋतु के समय मणिरथ अपने महलों की छत पर खड़ा संध्या का सुहावना दृश्य देख रहा था। पास ही युगबाहू के महल के बगीचे में उसकी पत्नी मदनरेखा सहेलियों के संग झूला झुलते हुये हंसी-मजाक कर रही थी।
कितना सुहावना मौसम है !

अचानक मणिरथ की नजर मदनरेखा पर पड़ी।

वाह, क्या गजब की सुन्दता है? लगता है, जैसे स्वर्ग से कोई परी उतर आई है, कौन है यह अप्सरा?

मणिरथ के सामने खड़ी दासी ने निवेदन किया–

महाराज ! यही है आपकी युवरानी ! भगवान ने रूप, रंग, बुद्धि सब कुछ दिल खोलकर दिया है। पूरे मालव जनपद में इसकी जोड़ी की सुन्दरी नहीं है।

मणिरथ कुछ देर तक मदनरेखा के विषय में पूछता रहा।

अंधेरा गहराने लगा तो मणिरथ लम्बी साँसें भरता हुआ महल के कक्ष में आकर सिर पर हाथ धर कर गुम-सुम सा बैठ गया।

तभी महारानी ने महलों में प्रवेश किया। राजा को उदासी में खोया देखकर नजदीक आकर पूछा–

महाराज ! आज क्या हो गया आपको? तबियत तो ठीक है न!

ओह ! महारानी ! आप कब आई! मैं तो यूँ ही राजकाज की चिंता में डूबा था... कोई खास बात नहीं...